# 13 अजमेर की यात्रा

गुरमीत अजमेर घूमना चाहता था। उसने रज्ज़ाक को लिखा था कि वह उसी के घर ठहरेगा। उसका घर दरगाह बाज़ार में हैं। आज सवेरे जब गुरमीत रेलगाड़ी से उतरा, तो रज्ज़ाक उसे अपने डिब्बे के सामने ही मिल गया। उतरते ही उसने पहली बात यही कही, ''दोस्त, आज तो रेलगाड़ी में मेरा कचूमर ही निकल गया। कितनी भीड़ रहती है इस रेलगाड़ी में।''

''रमज़ान के महीने में अगर तुम यहाँ आना चाहो तो सोच–समझ कर ही आना। यों भी एकदम सींकिया पहलवान हो'', रज्ज़ाक ने हँसते हुए जवाब दिया।

''क्या उस समय और भी अधिक भीड़ हो जाती है ?''

''अरे, पूछो ही मत! उस समय अजमेर की आबादी में कम से कम एक लाख लोग और जुड़ जाते हैं। यात्रियों के लिए बहुत–सी व्यवस्थाएँ की जाती हैं। सड़कों पर, बाजारों में, जहाँ देखो वहाँ भीड़–ही–भीड़ हो जाती है।''

''तुम्हारे घर के पास तो मेला लगा रहता होगा ?''

''कुछ पूछो ही मत! उन दिनों तो बाज़ार जाकर सब्जी लाने में भी पहलवानी दिखानी पड़ती है।'' दोनों मित्र ज़ोर से हँस पड़े।

कुछ देर बाद गुरमीत को रज्ज़ाक अजमेर की सैर कराने ले गया।

''यह देखो, यह सदर दरवाज़ा कहलाता है और वह सामने बुलंद दरवाज़ा। उसके भीतर ही दरगाह है। हम लोग वहीं चल रहे हैं,'' रज्ज़ाक ने

बताया।

''और ये बड़े – बड़े कड़ाह ?'' बुलंद दरवाज़े के दाएँ–बाएँ दिखाते हुए गुरमीत ने पूछा।

''इन्हें देग कहते हैं। इस बड़े देग में सौ मण से ज्यादा चावल का जरदा पक सकता है और छोटे में साठ मण। उर्स के समय वही प्रसाद बाँटा जाता है। उसे 'देग लूटना' कहते हैं। उस समय तो यहाँ कंधे से कंधा छिल जाता है। आओ आगे चलें।''

''यह बारहदरी और भीतर की मज़ार सब संगमरमर से जड़े हैं। देखो ना, कितना अच्छा लगता है यह सब।'' गुरमीत ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

''हाँ, अत्यंत शांत और पवित्र। साथ ही गुलाब के फूलों की भीनी–भीनी महक भी फैल रही है।''

बाहर आकर गुरमीत ने पूछा, '' क्यों दोस्त, मज़ार पर वह चादर कैसी थी ?''

''यहाँ चादरें चढ़ाई जाती हैं। जब कोई मनौती मनाता है,

अब देखो, उस पहाड़ी पर तारागढ़ है। इसके ढलान में पृथ्वीराज का स्मारक है।

''कौन पृथ्वीराज ? जिन्होंने भारत पर आक्रमण करने वाले मोहम्मद गौरी को कई बार हराया था ?

''हाँ, वही, चौहानराज जो भारत के सम्राट रहे। रज्जाक अब आनासागर चलें। रास्ते में ही सोनीजी की नसियाँ है और सुभाष बाग भी देख लेंगे।''

''वह गुंबदों वाला मकान है ना! वह महर्षि दयानंदजी का आश्रम है।

यहीं पर उनकी समाधि है। जानते हो, दयानंद के नाम पर ही अजमेर के विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है। समाधि के चारों ओर देखो, कितना सुंदर दृश्य है।''

''बहुत ही सुहावना! इस समय आना सागर में पानी भी काफी है। दूसरी पाल पर बच्चों के खेलने और झूलने के बहुत से साधन हैं और हाँ, तुम चलाना चाहो तो नाव की व्यवस्था भी है।''

''ना बाबा ना, मुझे नाव में डर लगता है। चलो थोड़ी देर बाग में बैठते हैं।''

आज तो थक गए। कल हम पुष्कर चलेंगे। गुरमीत ने प्रस्ताव रखा और फिर दोनों घर लौट पड़े लेकिन रास्ते में दाहिर सेन स्मारक देखना नहीं भूले।

सुबह पहली ही बस से पुष्कर निकले। अरावली की घाटियों में बस भागी जा रही थी। आधे घंटे में बस रुकी तो मंदिर दिखाई देने लगे।

लो आ गया पुष्कर। इधर देखो यह पुष्कर सरोवर। इसके चारों ओर

घाट ही घाट दिखाई दे रहे हैं। यहीं नहा लेते हैं। जानते हो न, यह तीर्थराज कहलाता है। यहाँ स्नान का अपना महत्त्व है।

लो अब पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर देखते हैं। यह दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इसके दायीं ओर पहाड़ी पर जो मंदिर दिखाई दे रहा है, वह गायत्री देवी का है और बायीं पहाड़ी पर सावित्री देवी का।''

यह मेला प्रांगण है। यहाँ कार्तिक मास में एकादशी से पूर्णिमा तक भारी मेला भरता है। खूब पशु खरीदे और बेचे जाते हैं। दुनियाभर से लोग आते हैं।

लो अब पंचकुंड चलते हैं। वहाँ पाँच कुण्ड हैं, जिनको पाँडवों ने बनाया था। उसके ऊपर ही गोमुख है। जिससे गिरने वाला पानी एक से दूसरे कुंड को भरता चलता है।

वाह, पानी फालतू नहीं जाता। कुण्डों को ही भरा हुआ रखता है।

खाना वहीं खायेंगे, मगर कोई बंदर झपट कर न ले जाए, 'ध्यान रखना, वहाँ खूब बंदर रहते हैं।

## अभ्यास कार्य

### शब्द–अर्थ

| | | |
|---|---|---|
| मज़ार | – | पीर का कब्र |
| बारहदरी | – | बरामदा |
| रमजान | – | मुस्लिम कलेण्डर के एक माह का नाम |
| व्यवस्था | – | तैयारी / प्रबंध |
| सदर | – | मुख्य |
| मण | – | चालीस किलो |
| ज़रदा | – | चावल का व्यंजन |
| घाटी | – | पहाड़ों के बीच का रास्ता |
| गुंबद | – | शिखर, |
| देग | – | बड़ा बरतन |

### उच्चारण के लिए

व्यवस्थाएँ, कार्तिक, ब्रह्मा, प्रसिद्ध, गुंबद, तीर्थराज

### सोचें और बताएँ

1. गुरमीत और रज्जाक कहाँ घूमने गए ?
2. अजमेर विश्वविद्यालय का नाम किसके नाम पर रखा गया है ?
3. पुष्कर में किसका मंदिर है ?
4. तीर्थराज किसे कहा गया है ?

### लिखें

1. नीचे लिखे वाक्यों के आगे सही या गलत का निशान लगाएँ।

- रमज़ान के महीने में कम से कम एक लाख यात्री अजमेर आते हैं। ( )
- रज्ज़ाक मदार में रहता है। ( )
- गुरमीत रेल से अजमेर गया। ( )
- अजमेर की यात्रा गुरमीत ने अकेले की। ( )
- उर्स के समय देग में बने चावल बाँटने को 'देग लूटना' कहते हैं। ( )

2. रमज़ान के महीने में अजमेर सोच–समझकर आने की बात रज्ज़ाक ने क्यों कही ?
3. रमज़ान के दिनों में रज्ज़ाक के मोहल्ले का प्रत्येक घर सुगंध से क्यों भर उठता है?
4. यदि तुम अजमेर व पुष्कर जाओ तो वहाँ क्या–क्या देखना पसंद करोगे ?
5. पुष्कर में पहाड़ी पर किसका मंदिर है ?
6. पंचकुण्ड़ों की क्या विशेषताएँ है ?
7. नीचे लिखे वाक्य किसने किससे कहे –

| वाक्य | किसने कहा | किससे कहा |
|---|---|---|
| कितनी भीड़ रहती है, इस गाड़ी में! | | |
| जो भी अजमेर आता है, इसे ज़रूर देखता है। | | |
| बहुत सुंदर! इस तालाब में पानी भी काफी है। | | |

8. "जहाँ देखो वहीं भीड़ ही भीड़ हो जाती है।" इस वाक्य में अधिकता बताने के लिए भीड़ ही भीड़ कहा गया है। इसी प्रकार अधिकता बताने के लिए ही शब्द जोड़कर वाक्य की पूर्ति करें।

(क) बाग में फूल .....थे।

(ख) मेले में दुकानें .....थीं।

(ग) हलवाई की दुकान पर मिठाइयाँ ..... थीं।

- इस तरह के और भी वाक्य लिखो।

(घ) .....

(ङ) .....

## भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्य को ध्यान से पढ़ो।

सड़कों और बाजारों में, जहाँ देखो भीड़ ही भीड़ हो जाती है।

रेखांकित शब्द एक से अधिक सड़कों और बाज़ारों के बारे में बता रहे हैं। इसी तरह एक से अधिक का अर्थ बताने वाले शब्दों से नीचे दी गई तालिका को पूरा करें।

| एक | अनेक |
|---|---|
| सड़क | सड़कों पर गड्ढे पड़े हैं। |
| घर | दीपावली पर ..... की सफाई करते हैं। |
| फल | ..... को धोकर खाओ |
| फूल | ..... की खुशबू आ रही है। |
| शहर | यहाँ कई ..... के लोग हैं। |
| गाँव | भारत ..... का देश है। |
| पेड़ | इन ..... पर फूल और फल लगेंगे। |

## यह भी करें–

| अजमेर के स्थलों के नाम | पुष्कर के स्थलों के नाम |
|---|---|
| | |
| | |
| | |
| | |

- तुम भी कहीं घूमने गए होंगे। बातचीत करो कि

| कहाँ–कहाँ गए | क्या – क्या तैयारी की | क्या–क्या देखा |
|---|---|---|
| | | |

- मेरा संकलन में दर्शनीय स्थलों के चित्र लगाएँ। उनके नीचे उनका परिचय भी लिखें।

मिलने पर मित्र का आदर करो, पीठ पीछे प्रशंसा करो और आवश्यकता के समय उसकी मदद करो। – अज्ञात